नवभारत 5 अप्रैल 2026

रविवारीय

डॉ.ब्रह्मदीप अलूने
(विदेशी मामलों के जानकार)

यदि ईरान इन चुनौतियों का समाधान कर लेता है,तो वह न केवल इस्लामिक दुनिया में,बल्कि वैश्विक स्तर पर भी एक सशक्त और संतुलित विकास मॉडल के रूप में उभर सकता है.ईरान को अपनी कूटनीति में संतुलित और व्यावहारिक सुधार करने की आवश्यकता है जिससे वह अपने पड़ोसी देशों के साथ भरोसेमंद और स्थायी संबंध स्थापित कर सके. क्षेत्रीय सहयोग,व्यापार और सुरक्षा संवाद को बढ़ावा देकर वह अपनी छवि को सकारात्मक बना सकता है.इसके साथ ही यदि ईरान विवादास्पद समूहों या आतंकी संगठनों से दूरी बनाकर पारदर्शी नीति अपनाता है,तो अंतरराष्ट्रीय समुदाय का विश्वास भी मजबूत होगा.इस दिशा में उठाएं गए कदम न केवल उसे कूटनीतिक अलगाव से बाहर ला सकते है,बल्कि आर्थिक निवेश,सहयोग और वैश्विक स्वीकार्यता के नए अवसर भी प्रदान कर सकते है.

आधुनिकता, अनुसंधान, शिक्षा और प्रगति से भरपूर है ईरान

अमेरिका और इजराइल के साथ जारी तनावपूर्ण हालात में ईरान की सामरिक क्षमता केवल उसकी सैन्य शक्ति का परिणाम नहीं है,बल्कि यह उसके मजबूत शैक्षिक ढांचे और वैज्ञानिक प्रगति का प्रतिफल भी है.दरअसल वैश्विक परिदृश्य में ईरान एक ऐसा इस्लामिक राष्ट्र है,जिसने जटिल अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों,आर्थिक प्रतिबंधों और कूटनीतिक,रणनीतिक तथा राजनीतिक दबावों के बावजूद शिक्षा,स्वास्थ्य,विज्ञान और तकनीकी विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है.खाड़ी के कई इस्लामिक देश अभी भी तेल आधारित अर्थव्यवस्था और सीमित सामाजिक विकास के दायरे में संघर्ष कर रहे है,वहीं ईरान ने आत्मनिर्भरता, शिक्षा, तकनीक और वैज्ञानिक अनुसंधान के माध्यम से एक अलग पहचान बनाई है.ईरान की प्रगति का सबसे मजबूत आधार उसकी शिक्षा प्रणाली है.

देश की साक्षरता दर करीब 85 फीसदी से अधिक है,जो कई इस्लामिक देशों की तुलना में काफी अधिक है.दुनिया में ईरान की छवि जो प्रस्तुत की जाती हो लेकिन ईरान की महिलाएं शिक्षा से लेकर हर क्षेत्र में बहुत आगे है.विश्वविद्यालयों में साठ फीसदी से अधिक छात्राएं होना इस बात का संकेत है कि शिक्षा के क्षेत्र में लैंगिक भागीदारी मजबूत हुई है.पश्चिमी दुनिया,1979 की इस्लामिक क्रांति के पहले के ईरान को आधुनिक और प्रगतिवादी बताता है,जबकि 1979 की इस्लामी क्रांति के बाद अपनाई गई नीतियों से भी शिक्षा में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल हुई है,जिसमें सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा और तकनीकी आत्मनिर्भरता को प्राथमिकता दी गई.प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य और मुफ्त बनाकर सरकार ने शिक्षा को समाज के हर वर्ग तक पहुंचाने का प्रयास किया.उच्च शिक्षा में विज्ञान और इंजीनियरिंग विषयों पर विशेष जोर दिया गया है.विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों में निवेश बढ़ाया गया है,जिससे देश में वैज्ञानिकों और इंजीनियरों की एक मजबूत पीढ़ी तैयार हुई है.इस्लामिक देशों में साक्षरता और उच्च शिक्षा के स्तर के मामले में ईरान अग्रणी देशों में गिना जाता है.सरकारी निवेश ने भी इस विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है.ईरान अपने सकल घरेलू उत्पाद का लगभग पांच फीसदी शिक्षा पर खर्च करता है,जिससे ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शिक्षा के विस्तार को बल मिला है.शिक्षा की गुणवत्ता की व्यापक पहुंच ने एक मजबूत मानव संसाधन तैयार किया है.

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में ईरान की उपलब्धियां उल्लेखनीय हैं.अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों के बावजूद,ईरान ने परमाणु ऊर्जा,मिसाइल तकनीक,नैनो टेक्नोलॉजी, बायोटेक्नोलॉजी और चिकित्सा विज्ञान में महत्वपूर्ण प्रगति की है.पिछले ढाई दशकों में ईरानी वैज्ञानिकों द्वारा लगभग पांच लाख शोधपत्र प्रकाशित किए गए हैं,जिससे ईरान वैश्विक वैज्ञानिक उत्पादन में लगभग पौने तीन फीसदी योगदान देने वाला देश बन गया है.यह वृद्धि दर वैश्विक औसत से कहीं अधिक तेज रही है,जो ईरान की वैज्ञानिक क्षमता और अनुसंधान संस्कृति को दर्शाती है.यह भी दिलचस्प है की ईरान के शोध कार्यों में अमेरिका,कनाडा और यूनाइटेड किंगडम जैसे देशों के वैज्ञानिक सहभागी रहे है जो यह दर्शाता है की राजनीतिक तनाव के बावजूद शैक्षणिक और वैज्ञानिक स्तर पर ईरान की प्रतिभाओं को

व्यापक स्वीकार्यता हासिल है और उनसे सहयोग जारी है.इसी प्रकार इंजीनियरिंग,चिकित्सा और विज्ञान के कई क्षेत्रों क्षेत्रों में ईरान ने विशेष उपलब्धियां हासिल की है.इस समय ईरान में आधुनिकता और परंपरा का एक अनूठा मिश्रण देखने को मिलता है. 20वीं सदी के प्रारंभ में रजा शाह पहलवी के शासनकाल में आधुनिकीकरण की शुरुआत हुई थी,जिसका उद्देश्य पश्चिमीकरण और औद्योगीकरण था.हालांकि 1979 की इस्लामी क्रांति के बाद यह प्रक्रिया पूरी तरह बदली और देश ने पश्चिमी मॉडल से हटकर स्वदेशी विकास और इस्लामी मूल्यों के साथ आधुनिकता को अपनाने का प्रयास किया.आज ईरान एक ऐसा समाज है,जहां अत्याधुनिक तकनीक और पारंपरिक धार्मिक मान्यताएं साथ-साथ चलती हैं.ईरान के आधुनिकीकरण की जड़ें उन्नसवीं सदी में अब्बास मिर्जा,गैम मघम फराहानी और अमीर कबीर जैसे सुधारकों के प्रयासों में देखी जा सकती हैं.इन नेताओं ने सैन्य,प्रशासनिक और शैक्षिक सुधारों के माध्यम से देश को आधुनिक बनाने की दिशा में कदम उठाएं थे.पहलवी काल में इस प्रक्रिया को गति मिली,लेकिन इस्लामी क्रांति के बाद इसे एक नई वैचारिक दिशा मिली.ईरान की प्रगति के साथ कई अंतर्विरोध भी जुड़े हुए हैं.एक ओर जहां शिक्षा, तकनीक और शहरी जीवन में आधुनिकता दिखाई देती है,वहीं दूसरी ओर सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर पारंपरिक और धार्मिक मूल्यों का गहरा प्रभाव बना हुआ है.महिला अधिकारों,हिजाब और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जैसे मुद्दों पर समाज में निरंतर बहस और संघर्ष देखने को मिलता है.ईरान में लोकतांत्रिक संस्थाओं और नागरिक स्वतंत्रताओं को लेकर भी प्रश्न उठते रहे हैं.संवैधानिक लोकतंत्र और जनता की आकांक्षाओं के बीच संतुलन स्थापित करना अब भी एक चुनौती बना हुआ है.एक सदी से अधिक समय से चल रहे सुधार प्रयासों के बावजूद,कानून के शासन,स्वतंत्रता और लोकतंत्र की पूर्ण स्थापना अभी भी अधूरी मानी जाती है.लेकिन कुछ राजनीतिक विरोधाभासों के बाद भी ईरान के लोगों ने अभूतपूर्व प्रगति की है. जनसांख्यिकीय परिवर्तन भी ईरान की प्रगति का एक महत्वपूर्ण पहलू है.

> ईरान की प्रगति एक जटिल लेकिन प्रेरणादायक कहानी प्रस्तुत करती है.यह एक ऐसा मॉडल है,जिसमें शिक्षा, विज्ञान, आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक पहचान का संतुलन देखने को मिलता है.दुनिया और इस्लामिक देशों के लिए यह एक महत्वपूर्ण उदाहरण है कि यदि नीतियों में स्पष्टता और समाज में शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता हो तो सीमित संसाधनों और विपरीत परिस्थितियों में भी विकास संभव है.ईरान के बारे में वैश्विक स्तर पर जो छवि प्रस्तुत की जाती है,वह अक्सर राजनीतिक तनाव,प्रतिबंधों और विवादों तक सीमित रह जाती है. इस कारण इस देश की सकारात्मक उपलब्धियां और सामाजिक-वैज्ञानिक प्रगति व्यापक चर्चा से बाहर रह जाती है.लेकिन यदि हम तथ्यों और जमीनी हकीकत पर नजर डालें,तो साफ दिखता है कि ईरान एक ऐसा राष्ट्र है,जो प्रतिभा,ज्ञान और आत्मनिर्भरता के आधार पर निरंतर आगे बढ़ रहा है.उच्च शिक्षा में व्यापक भागीदारी,युवाओं और महिलाओं की सक्रिय भूमिका ईरान के ज्ञान-आधारित विकास को मजबूती देती है. जाहिर है ईरान की सामरिक क्षमता केवल हथियारों तक सीमित नहीं है, बल्कि उसके पीछे एक व्यापक वैज्ञानिक दृष्टिकोण और दीर्घकालिक शैक्षिक निवेश कार्य कर रहा है,जिसने उसे वैश्विक मंच पर एक सक्षम और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में स्थापित किया है.

पिछले कुछ दशकों में देश ने जनसंख्या वृद्धि दर को नियंत्रित करने में सफलता हासिल की है.महिलाओं की शिक्षा और जागरूकता के कारण प्रजनन दर में तेजी से गिरावट आई है.यह परिवर्तन सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है.खामनेई की धार्मिक सत्ता ने ईरान की अर्थव्यवस्था में भी विविधता लाने के निरंतर प्रयास किए.तेल और गैस पर निर्भरता को कम करने के लिए विनिर्माण,कृषि और सेवा क्षेत्रों को विकसित किया गया है.हालांकि प्रतिबंधों के कारण आर्थिक चुनौतियां बनी हुई है लेकिन आत्मनिर्भरता की नीति ने देश को स्थिर बनाए रखने में मदद की है.ईरान की प्रगति का सबसे महत्वपूर्ण आधार उसकी प्रतिरोध अर्थव्यवस्था की नीति है.वर्षों से अमेरिका और पश्चिमी देशों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों ने ईरान की अर्थव्यवस्था को झकझोरने की कोशिश की,लेकिन ईरान ने इसे अवसर में बदलने का प्रयास किया.उसने आयात पर निर्भरता कम करते हुए घरेलू उत्पादन को बढ़ावा दिया.कृषि,लघु उद्योग और विनिर्माण क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए गए.इसका परिणाम यह हुआ कि प्रतिबंधों के बावजूद ईरान की अर्थव्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त नहीं हुई बल्कि उसने एक वैकल्पिक मार्ग खोज लिया.बाहरी दबावों के बावजूद,देश ने घरेलू उत्पादन,नवाचार और स्थानीय संसाधनों के उपयोग पर जोर दिया है.इससे आर्थिक स्थिरता बनी रही तथा एक मजबूत वैज्ञानिक और औद्योगिक आधार भी तैयार हो गया.परमाणु ऊर्जा,अंतरिक्ष अनुसंधान और चिकित्सा विज्ञान में ईरान ने उल्लेखनीय प्रगति की है.ईरान का परमाणु कार्यक्रम,चाहे वह विवादों में रहा हो,लेकिन इसने देश की वैज्ञानिक क्षमता और तकनीकी आत्मनिर्भरता को साबित किया है.कोविड-19 महामारी के दौरान ईरान ने स्वदेशी वैक्सीन विकसित कर अपनी वैज्ञानिक क्षमता का प्रदर्शन किया था.

व्यंग्य

कैसे बनीं ..बिना गैस रोटी ऐसे बनीं...

रवि उपाध्याय
(लेखक व्यंगकार और राजनीतिक समीक्षक हैं)

हमारा देश अजूबों का देश है. यहां कभी भी और कहीं भी बिन बादल बरसात हो सकती है. एक कहावत है कि बोए पेड़ बबूल के तो आम कहां से होएं. लेकिन यह वह मुल्क हैं जहां उक्त कहावत को झूठा साबित कर बबूल के पेड़ पर भी आम उगा दिए जाते हैं. यह वह मुल्क हैं जहां तारे जमीं पर आ जाते हैं. यह दावा हम जमाने से सुनते चले आ रहे हैं कि इस देश में पाए जाने वाले नाग के मस्तक में मणि होती है. यह अलग बात है कि आज तक किसी ने भी, न तो ऐसे किसी नाग को देखा है, जिसके सिर पर या सिर में मणि होती हो, न ही ऐसी किसी नाग मणि को देखा गया है. लेकिन उक्त कहावत सदियों से ऐसे ही चली आ रही है. नाग में मणि होने की कल्पना वैसी ही है जैसी नेताओं के बारे में ईमानदार होने का दावा किया जाता है. दोनों चीजें आज तक नहीं सिद्ध हुईं हैं. कुछ एक अपवादों को छोड़ दिया जाए तो नेता और ईमानदारी पृथ्वी पर पाए जाने उन दो ध्रुवों के समान हैं जो कभी नहीं मिलते. यह बस एक कोरी कल्पना है.

यहां वह देश है जहां नलके के पानी से स्नान करते समय भी व्यक्ति हर हर गंगे बोल कर गंगा मैया के स्नान का आनन्द और पुण्य प्राप्त कर लेता है. हमारे देश में दान देने में हम आनंद का अनुभव तो करते ही हैं. साथ ही इस माध्यम से हम स्वर्ग में भी अपनी सीट बुक कर लेते हैं. वैसे आनंद लेने में हम लोगों का दुनिया में कोई सानी नहीं है. आपस में दो पड़ोसी लड़ें तो उस में भी हम आनंद ढूंढ ही लेते हैं. अब देखिए अमेरिका और इजराइल ने ईरान पर हमला कर दिया.

ईरान भी कहां पीछे रहने वाला था उसने भी अपने भूरा भाई समर्थक पड़ोसियों पर पटाखे फेंक दिए. ये मुल्क अमेरिका द्वारा ईरान पर फेंके जा रहे पटाखों पर तालियां बजा रहे थे. भूरा भाई को बता रहे थे भूरा भाई इसकी नाभि पर मिसाइल मारो..नाभि पर. जब ये मुल्क एक दूसरे पर मिसाइल उड़ा रहे हों तो भला हम चुप- चाप क्यों रहते. हमने भी अफवाहों की मिसाइलें उड़ाना शुरू कर दिया. एक बोला गैस खत्म होने वाली है. दूसरा बोला पेट्रोल- डीज़ल खत्म होने वाला है. लोग दौड़ पड़े और खाली गैस सिलेंडर लेकर अनुशासन बद्ध हो कर लाइनों में जा कर खड़े हो गए. यह देख मन भर आया कि मेरे मुल्क के लोग कितने अनुशासन प्रिय हैं जो कतार बना कर खड़े हैं. इस तरह का परिवर्तन या तो देश में आपातकाल के समय आया था या 2014 के बाद अब आया है. उक्त 2014 के बाद नोटबंदी हो या करोना में टीकाकरण या मुफ्त का राशन या मतदाताओं की लंबी लंबी लाइनें सब जगह अनुशासन बद्ध लोग नज़र आते हैं. ऐसी ही लाइनों पर न्यूज़ चैनलों में एंकर गला फाड़ फाड़ कर खाली टंकियां दिखाने लगे.

न्यूज चैनलों पर खाली गैस सिलेंडर नज़र आ रहे थे पर मज़ा नहीं आ रहा था. तभी किसी ने ज्ञान दिया, तब जा कर लोगों में मार पीट शुरू हुई, वीडियो जानदार बन गए और यही मारपीट आल इंडिया न्यूज़ बन गई. यह दृश्य देख कर समझ में आया न्यूज़ चैनल वालों को भी कितनी मेहनत करनी पड़ती है. डायरेक्शन देना पड़ता है. शूटिंग कंप्लीट होने के बाद दृश्य छोटे पर्दे पर आए और सियासी दल बे पर्दा हो गए. गैस से तापमान बढ़ने लगा और इसी के साथ नेता बाहर निकल निकल कर आने लगे. कहते हैं कि अफवाहों के पैर नहीं होते हैं,वे बिना सिर, बिना पैर के हवा की स्पीड से उड़ने लगीं. न्यूज़ चैनलों पर सिलेंडरों की जो लाइनें तो दिखाई जा रहीं थीं. पर कोई आदमी ऐसा नहीं दिखाया जा रहा था जो गैस सिलेंडर न होने पर भूखा हो. यह स्क्रिप्ट की कमजोरी थी. गैस सिलेंडर खाली थे उनके साथ खड़े लोगों का पेट भरा हुआ लग रहा था. कहते हैं कि भूखे भजन न होएं गोपाला. यहां तो नेता लोग खाली पेट होने का दावा करते हुए गैस सिलेंडर का रोना रोते हुए भाषण पैल रहे थे. यह समझ में नहीं आ रहा था कि न्यूज़ चैनलों पर जो सिलेंडरों की लाइनें दिखाई दे रही हैं वो उपभोक्ताओं की हैं या जमाखोरों की. इसी गैस के चलते सैकड़ों लोक गीत म्यूज़िक एल्बम यूट्यूब पर बनने लगे. इनके बोल हैं पिया हम नहीं चूल्हा फ़ुकब भराऊं अहां गैस. अन्य एल्बम देखिए पिया के सिलेंडर में गैस नईखे.... इसे कहते हैं मौके पर चौका.

एक बात तो है कि हमारे देश का विपक्ष भी कोई भी मौका नहीं छोड़ता है. मोदी जी ने कोरोना काल में आपदा को अवसर में बदलने का फॉर्मूला दिया था. बस यही फॉर्मूला अब विपक्ष ने मौजूदा सरकार पर फिट कर दिया. सरकार भले कहती रहे कि देश में तेल और गैस की कोई कमी नहीं है, हॉर्मूज जलडमरू से हम तेल निकाल रहे हैं. लेकिन विपक्ष कह रहा है कि गलत बोल रहे हो कमी है. हम तो अब तुम्हारी गैस भी निकलेंगे और तेल भी निकलेंगे. कमी का यह डमरू बजता ही रहेगा, बजता ही रहेगा. गैस की कमी हो या न हो हम तो बिना गैस के भी अपनी सियासी तवे पर अपनी रोटियां पकाते ही रहेंगे. कुछ सालों पहले संगीतकार बावला और कंचन द्वारा गाया गाना काफी पॉपुलर हुआ था जिसके बोल थे - फुलौरी बिन चटनी कैसे बनी, इसी तर्ज पर जनता भी देख रही है, कि बिन गैस सिलेंडर रोटी ऐसे पकी.....

रामराज्य में सभी ज्ञानी थे इसीलिये दंभरहित कृतज्ञ और अकपट की भावना मन में रखते थे. सब निर्दंभ धर्मरत पुनी. नर अरु नारि चतुर सब गुनी.. सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी. सब कृतज्ञ नहिं कपट सयानी.. (मानस,उ.कां.21.4) रामनाम की गूँज-किसी भी शासक का चरित्र दृढ़ हो एवं उसके कार्य प्रजा के अनुकूल हो तो स्वाभाविक ही प्रजा उसका नामजप करती है. रामराज्य में प्रजा केवल राम की ही चर्चा होती थी. सारा जगत राममय हो रहा था. रामो रामो राम इति प्रजानामभवन् कथा (वा.रा.यु.कां.128.102). पुरी के लोग कहते थे कि हमारे लिये चिरकाल तक ऐसे ही प्रभावशाली राजा रहें (वही, उ.कां.41.21). मानस में तुलसी ने प्रजा को रामभक्ति में रत बताया है- राम भगति रत नर अरु नारी. सकल परमगति के अधिकारी.. तो ऐसा था रामराज्य. राम ने इस तरह स्थापित किया था अपने साम्राज्य में आदर्श का प्रतिरूप.

रामराज्य जिसकी प्रासंगिकता आज भी है

प्रो विवेकानंद तिवारी

रामराज्य एक आदर्श, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी शासन व्यवस्था का प्रतीक है, जहाँ राजा राम के शासनकाल में दु:ख, दरिद्रता, भय और अन्याय का पूर्ण अभाव था. यह सुशासन, धर्मपरायणता, समानता और आत्मनिर्भरता पर आधारित समाज है, जहाँ अंतिम व्यक्ति तक को न्याय और सुख प्राप्त होता है.

एक ऐसे आदर्श राज्य की कल्पना तथा धरा पर उसका अवतरण, जहाँ हर ओर धर्ममय वातारण और तत्जन्य सुख-समृद्धि का वातारवण हो, प्रारंभ से ही मानवमन की लालसा रही है. अवध के सिंहासन पर राज्याभिषेक के बाद राम के शासन को वाल्मीकि ने एक ऐसा ही आदर्श राज्य बताया है. इसे उन्होंने रामराज्य की संज्ञा दी है. किसी भी देश में राजा अथवा शासक को राज्य की खुशहाली का जिम्मेदार माना जाता रहा है. इसके विपरीत यदि राज्य में कहीं कोई बदहाली है तो इसका उत्तरदायी भी राजा ही रहता है. महर्षि वाल्मीकि ने राम राज्य का वर्णन करते हुए कहा है श्रीराम के राज्य में स्त्रियां विधवा नहीं होती थी,सर्पों से किसी को भय नहीं था और रोगों का आक्रमण भी नहीं होता था. राम-राज्य में चोरों और डाकुओं का नाम तक न था.दूसरे के धन को लेने की तो बात ही क्या,कोई उसे छूता तक न था.राम राज्य में बू? बालकों का मृतक-कर्म नहीं करते थे अर्थात् बाल-मृत्यु नहीं होती थी. रामराज्य में सब लोग वर्णानुसार अपने धर्मकृत्यों का अनुष्ठान करने के कारण प्रसन्न रहते थे.श्रीराम उदास होंगे,यह सोचकर कोई किसी का हृदय नहीं दुखाता था.

राम-राज्य में वृक्ष सदा पुष्पों से लदे रहते थे,वे सदा फला करते थे. उनकी डालियां विस्तृत हुआ करती थी. यथासमय वृष्टि होती थी और सुखस्पृशी वायु चला करती थी. ब्राह्मण,क्षत्रीय,वैश्य और शूद्र कोई भी लोभी नहीं था.सब अपना-अपना कार्य करते हुए सन्तुष्ट रहते थे.राम-राज्य में सारी प्रजा धर्मरत और झूठ से दूर रहती थी.सब लोग शुभ लक्षणों से युक्त और धर्म परायण होते थे. इस प्रकार श्रीराम ने 11,000(ग्यारह सहस्त्र) वर्ष तक पृथ्वी पर शासन किया. अयोध्या में सभी निवासी दीर्घ-जीवी,धर्म और सत्य का आश्रय लेने वाले,पुत्र,पौत्र और स्त्रियों सहित उस नगर में रहते थे. यथा राजा तथा प्रजा अर्थात जैसा राजा वैसी प्रजा, यह उक्ति लोक में प्रसिद्ध भी है. किंतु संभवत: अभी तक कोई राजा इतना अच्छा नहीं हुआ कि उसके राज्य में सारी प्रजा पूर्णत: प्रसन्न और संतुष्ट हो, राज्य में चारों ओर खुशहाली हो. भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखें तो संभवत: एकमात्र राम के शासन में रहा राज्य आदर्श राज्य कहा गया है.

रामराज्य का अर्थ ही हो गया, एक आदर्श राज्य, सुशासित राज्य. रामकथा में रामराज्य का प्रत्यय अत्यंत महत्वपूर्ण है. रामकथा की लोकप्रियता और सर्वस्वीकृति का एक महत्वपूर्ण कारण रामराज्य की अवधारणा भी है. राम सचेत शासक तो थे ही, पर मुख्य बात यह है कि स्वयं अपने चरित्र के माध्यम से उन्होंने परिवार, समाज एवं देश का अच्छा सदस्य बनने की प्रेरणा भी अपनी प्रजा को दी थी. वाल्मीकीय रामायण में तीन स्थानों पर रामराज्य का उल्लेख है. सर्वप्रथम इसका वर्णन बालकांड (सर्ग 1) में मिलता है. यहाँ नारद वाल्मीकि को संक्षेप में रामकथा सुनाते हैं जो राम के जन्म से लेकर अयोध्या वापसी पर राम के राज्याभिषेक तक चलती है. इस तरह यह कथा भूत से लेकर वर्तमान तक की है. फिर आगे छह श्लोकों में नारद भविष्य की कथा बताते हैं कि अब जो राम अयोध्या पर राज्य करेंगे, वह राम-राज्य कैसा होगा. यहाँ संक्षेप में रामराज्य की विशेषताएँ बताई गई हैं. दूसरी बार वाल्मीकि युद्धकांड (सर्ग 128) में रामराज्य का वर्णन करते हैं जिसमें रामराज्य कैसा था, यह बताया गया है. अंत में उत्तरकांड (सर्ग 41) में भरत के मुख से पुन: रामराज्य का वर्णन सुनने मिलता है.

उल्लेखनीय है कि रामराज्य को लेकर तीनों वर्णनों में अधिकांश तथ्य समान हैं. रामराज्य की छह प्रमुख विशेषताएँ हैं. इस काल में सभी सुखी है, सभी कर्तव्यपरायण हैं, सभी दीर्घायु है, सभी में दाम्पत्य प्रेम है, प्रकृति उदार है और सभी में नैतिक उत्कर्ष देखा जा सकता है. रामराज्य की बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ सभी प्रसन्न, सुखी, संतुष्ट, हृष्ट-पुष्ट है. सुख या संतुष्टि तन-मन दोनों की होती है. शरीर के स्वस्थ होने का अर्थ है कि वह रोगव्याधि से, जो हमें दुख देते हैं, मुक्त हैं. स्वस्थ शरीर सुख का बड़ा कारण होता है.

युद्ध की तबाही : मानवता के साथ प्रकृति का भी मौन विनाश

ओजस्कर पाण्डेय

21वीं सदी का वैश्विक परिदृश्य यह स्पष्ट संकेत देता है कि युद्ध अब केवल सीमाओं और सत्ता के संघर्ष तक सीमित नहीं रह गया है. आधुनिक युद्ध बहुआयामी संकट पैदा करते हैं—मानवीय, आर्थिक, सामाजिक और सबसे गंभीर, पर्यावरणीय. अक्सर युद्ध की चर्चा में मानव हानि, विस्थापन और राजनीतिक परिणामों पर जोर दिया जाता है, लेकिन पर्यावरण पर इसके दीर्घकालिक और विनाशकारी प्रभावों को अपेक्षाकृत कम महत्व दिया जाता है. यह उपेक्षा आने वाली पीढ़ियों के लिए एक गंभीर खतरा बन सकती है. युद्ध आधुनिक विश्व की सबसे बड़ी विडंबनाओं में से एक है. यह न केवल मानव जीवन को नष्ट करता है, बल्कि पर्यावरण पर भी ऐसा प्रभाव डालता है जो दशकों तक बना रहता है. आज जब दुनिया जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता ह्रास और संसाधनों की कमी जैसी समस्याओं से जूझ रही है, युद्ध इन संकटों को और अधिक गहरा कर रहा है.

हाल के वर्षों में हुए संघर्षों ने युद्ध की भयावहता को पुन: उजागर किया है. ने वैश्विक शांति और स्थिरता को गहरा झटका दिया है. संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, 1 करोड़ से अधिक लोग विस्थापित हुए, हजारों नागरिकों की मृत्यु, स्वास्थ्य, शिक्षा और ऊर्जा ढांचा व्यापक रूप से नष्ट हुए. इसी प्रकार, युद्ध ने लगभग 5 लाख लोगों की जान ली और 1.3 करोड़ से अधिक लोगों को विस्थापित किया. यह आंकड़े दर्शाते हैं कि युद्ध मानव सभ्यता को किस स्तर तक प्रभावित करता है. युद्ध को प्राय: सुरक्षा, सम्मान और राष्ट्रीय स्वाभिमान के आवरण में प्रस्तुत किया जाता है, मगर इसके परिणामों के पीछे छिपी सच्चाई अत्यंत विचलित करने वाली होती है. रूस और यूक्रेन में पहले से जारी युद्ध के बीच अब विश्व ईरान और इजराइल के मध्य संघर्ष से बढ़ते तनाव को देख रहा है, जिसमें अमेरिका की भी सक्रिय भागीदारी है. वार और पलटवार की विभीषिका से यह स्पष्ट हो जाता है कि आधुनिक युद्ध सीमाओं तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उसकी आंच रिहायशी इलाकों तक पहुंचती है. शक्ति प्रदर्शन में दागी गई मिसाइलें केवल सामरिक ठिकानों को ही नहीं, बल्कि उन मासूम दिलों को भी दहला देती हैं, जिन्हें युद्ध और राजनीति का अर्थ तक मालूम नहीं, लेकिन भय का अनुभव भलीभांति होता है. ऐसे वातावरण में हर सुबह डर और आशंका लेकर आती है और रात अनिश्चितता की चादर ओढ़े बीतती है.

> युद्ध की तबाही को कम करने के लिए वैश्विक स्तर पर ठोस कदम आवश्यक हैं: ग्रीन मिलिट्री नीति - सैन्य गतिविधियों में स्वच्छ ऊर्जा का उपयोग. पर्यावरणीय जवाबदेही-युद्ध के बाद क्षति का आकलन और दंड. सतत पुनर्निर्माण -पर्यावरण अनुकूल इंफ्रास्ट्रक्चर. राजनयिक समाधान. संघर्षों को युद्ध से पहले ही सुलझाना है. युद्ध केवल वर्तमान का संकट नहीं, बल्कि भविष्य का भी विनाश है. यह मानवता और प्रकृति के बीच संतुलन को गहराई से प्रभावित करता है. हर युद्ध हमें यह सिखाता है कि विकास और विनाश के बीच की रेखा कितनी पतली है. आज आवश्यकता है कि विश्व समुदाय युद्ध को केवल राजनीतिक या सैन्य दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि एक व्यापक पर्यावरणीय संकट के रूप में भी देखे. यदि हमने समय रहते इस दिशा में कदम नहीं उठाए, तो आने वाली पीढ़ियाँ हमें कभी माफ नहीं करेंगी.

यही हाल रूस और यूक्रेन के बीच जारी युद्ध से भी उपजा है, जहां अनगिनत परिवारों की जिंदगी तबाह हो गई है. जिन नगरों और कस्बों में कभी जीवन की चहल-पहल थी, वहां अब विध्वंस का सन्नाटा पसरा है. खेतों की हरियाली बारूद की कालिमा से ढक गई है. सीमाएं भले ही बदल जाएं, पर क्या उन माताओं की पीड़ा कम हो पाएगी, जिन्होंने युद्ध में अपने पुत्र खो दिए? क्या कोई राजनीतिक उपलब्धि उस मासूम बचपन की भरपाई कर सकती है, जिसकी पाठशाला विस्फोटों की गूंज में खो गई? युद्ध की राख केवल इमारतों को नहीं ढकती, बल्कि वह विश्वास, स्थिरता और भविष्य की उजली संभावनाओं को भी धूमिल कर देती है. दक्षिण एशिया में भी स्थितियां कम चिंताजनक नहीं हैं. पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच सीमावर्ती क्षेत्रों में समय-समय पर उकसाने वाला तनाव उन लोगों के जीवन को अस्थिर कर देता है, जो पहले ही दशकों की असुरक्षा का बोझ ढो रहे हैं. निर्णय चाहे राजधानी के गलियारों में लिए जाएं, लेकिन उनका प्रभाव उन गांवों में महसूस होता है, जहां लोग केवल शांति, रोजगार और सम्मानजनक जीवन की आकांक्षा रखते हैं. युद्ध की आहट भर से विद्यालयों के द्वार बंद हो जाते हैं, बाजारों की रौनक गायब हो जाती है और सामान्य जीवन की धड़कन थम-सी जाती है.

विश्व के विभिन्न हिस्सों में फैलते इन संघर्षों की एक समान तस्वीर है- घोषणाएं, चेतावनियां, सैन्य जमावड़ा और अंतत: कराहती मानवता. हम रणनीति और सुरक्षा की चर्चा करते हैं, मगर क्या हम उन भूखे बच्चों की आंखों में झांकते हैं, जो सहायता शिविरों में भोजन की प्रतीक्षा करते हैं? क्या हम उन खाली कक्षाओं की निस्तब्धता सुनते हैं, जहां कभी सपनों को आकार दिया जाता था? युद्ध केवल प्राणनाशक ही नहीं होता, बल्कि वह भविष्य की संभावनाओं को भी निगल जाता है. वह शिक्षा को बाधित करता है, स्वास्थ्य सेवाओं को जर्जर कर देता है और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को अंधकार एवं अनिश्चितता की गर्त में धकेल देता है. हर वह जीवन जो युद्ध में समाप्त होता है, वह मात्र एक आंकड़ा नहीं होता, बल्कि उस दास्तां की कहानी बयां करता है, जो अपने पीछे तबाही के निशान छोड़ जाती है. युद्ध में नष्ट हुए घर और अन्य इमारतों का पुनर्निर्माण संभव है, अर्थव्यवस्थाएं समय के साथ संभल सकती हैं, मगर खोए हुए संबंधों की रिक्तता कभी नहीं भरती. युद्ध का पर्यावरण पर प्रभाव अक्सर 'धीमा जहर' साबित होता है, जो वर्षों तक पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुंचाता है. ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन और वायु प्रदूषण पर इसका प्रभाव पड़ा है. आधुनिक युद्धों में टैंक, लड़ाकू विमान और मिसाइलें भारी मात्रा में ईंधन जलाती हैं. अनुमान है कि रूस-यूक्रेन युद्ध के पहले वर्ष में ही लगभग 120 मिलियन टन ष्टह्र२ उत्सर्जन हुआ. यह उत्सर्जन कई विकासशील देशों के वार्षिक कार्बन उत्सर्जन के बराबर है. इसके अतिरिक्त, विस्फोटों से निकलने वाले नाइट्रोजन ऑक्साइड और सल्फर डाइऑक्साइड वायु गुणवत्ता को गंभीर रूप से खराब करते हैं. युद्ध के दौरान रासायनिक पदार्थ, भारी धातुएँ और तेल रिसाव जल और मिट्टी को दूषित कर देते हैं. युद्ध में लगभग 11 मिलियन बैरल तेल समुद्र में फैल गया, जिससे समुद्री पारिस्थितिकी को अपूरणीय क्षति हुई. मिडिल ईस्ट में जारी लड़ाई का असर अब सिर्फ सैन्य या राजनीतिक स्तर तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि ग्लोबल इकोनॉमी पर भी इसका गहरा असर पड़ने लगा है. संयुक्त राष्ट्र की एक नई रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिका और इजराइल के साथ ईरान के संघर्ष के चलते खाड़ी देशों को करीब 200 अरब डॉलर तक का आर्थिक नुकसान हो सकता है.